B.A. II Hons. | Topic : Distribution of Public Expenditure (सार्वजनिक व्यय का वितरण) | Page-1

Dr Kumari Manju
H.O.D. Eco
R.N.C.

सार्वजनिक व्यय का वितरण करते समय कुछ मान्यताएँ अर्थात् कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है जो निम्न हैं :

(1) सार्वजनिक व्यय को विभिन्न मदों में इस तरह विभाजित करना चाहिए कि प्रत्येक मद पर व्यय की गई इकाई से प्राप्त होने वाला 'सीमान्त सामाजिक संतोष' या सीमान्त उपयोगिता बराबर या समान हो, ताकि कुल व्यय से जनता को प्राप्त होने वाली कुल उपयोगिता अधिकतम हो सके। उदाहरण के लिए माना गया कि जैसे-जैसे सरकार रक्षा कार्य पर आवश्यकता से अधिक व्यय और शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर आवश्यकता से कम व्यय करती है, तब इस प्रकार के सरकारी व्यय से समाज को अधिकतम सामाजिक लाभ प्राप्त न होगा क्योंकि इस रीति से व्यय करने पर तीनों की सीमान्त उपयोगिता बराबर नहीं होगी। फलतः समाज को अधिकतम लाभ पहुँचाने के लिए सरकार को रक्षा कार्य पर व्यय घटाकर स्वास्थ्य पर आवश्यकता से व्यय करती है, तब इस प्रकार के सरकारी व्यय से समाज को अधिकतम सामाजिक लाभ प्राप्त न होगा क्योंकि इस रीति से व्यय करने पर तीनों की सीमान्त उपयोगिता बराबर नहीं होगी। फलतः समाज को अधिकतम लाभ पहुँचाने के लिए सरकार को रक्षा कार्य पर व्यय घटाकर, स्वास्थ्य तथा शिक्षा कार्यों पर व्यय बढ़ाना होगा जिससे कि तीनों मदों में 'समान सीमान्त उपयोगिता' मिल सके। यही सार्वजनिक व्यय का विभिन्न मदों में विभाजन का सिद्धान्त है।

इसे हम एक उदाहरण के द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं : सार्वजनिक व्यय की उपयोगिता : इसे तालिका से स्पष्ट करेंगे।

व्यय की इकाई	शिक्षा (सी० उपयोगिता)	सुरक्षा (अंकों में)
1	38 (3)	42 (1)
2	36 (4)	40 (2)
3	32 (6)	34 (5)
4	28 (7)	28 (8)
5	18	22
6	8	12
8	0	4

उपर्युक्त सारणी से इस बात की जानकारी होती है कि (i) सरकार के द्वारा 8 इकाइयों में से 4 इकाइयाँ शिक्षा और 4 इकाइयाँ सुरक्षा पर व्यय करेगी क्योंकि ऐसा करने से ही प्रत्येक मद पर व्यय होने वाली अंतिम इकाई की उपयोगिता (सीमान्त) बराबर रहती है और कुल उपयोगिता [(38+36+32+28)+(42+40+34+28) = 278] के बराबर मिलती है जो अधिकतम है।

(ii) यदि वह शिक्षा पर 3 इकाइयाँ और सुरक्षा पर 5 इकाइयाँ व्यय करती है तो कुल उपयोगिता [(38+36+32)+(42+40+34+28+22) = 272] के बराबर मिलती है जो स्पष्टतः पहली दशा की अपेक्षा कम है। इसके बाद की स्थिति में शिक्षा की व्यय की सीमान्त उपयोगिता 32 है, जबकि सुरक्षा व्यय पर सीमान्त उपयोगिता 22 है।

इसे रेखा चित्र के द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है : —

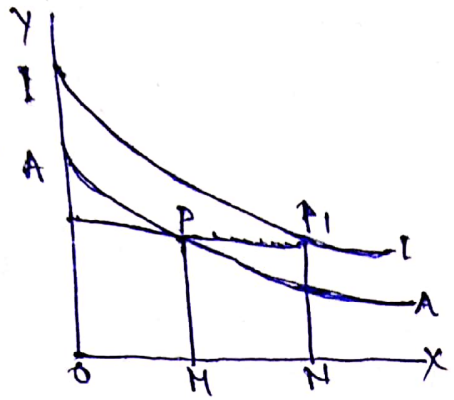

रेखाचित्र में AA शिक्षा पर तथा II सुरक्षा पर किए गए व्यय वाले सीमान्त सामाजिक कल्याण को प्रदर्शित करने वाले वक्र हैं। ये क्रमशः नीचे गिर रहे हैं। अधिकतम सामाजिक कल्याण की स्थिति उस समय प्राप्त होगी जब शिक्षा और सुरक्षा में मिलने वाला सीमान्त सामाजिक कल्याण के बराबर हो और यह तभी होगा जब सरकार शिक्षा पर OM व सुरक्षा पर ON मुद्रा की मात्रा व्यय करे और शिक्षा से मिलने वाले सीमान्त कल्याण MP = सुरक्षा से मिलने वाले सीमान्त कल्याण MP = सुरक्षा से मिलने वाले सीमान्त कल्याण NP1 हो जाय।

इसे हम दूसरे प्रकार से ~~निम्नानुसार~~ निम्नानुसार व्यक्त कर सकते हैं- अधिकतम सामाजिक कल्याण की स्थिति वहाँ होगी जब -

$$\frac{\text{शिक्षा पर व्यय के सीमान्त सामाजिक कल्याण}}{\text{शिक्षा कुल व्यय}} = \frac{\text{सुरक्षा पर व्यय के सीमान्त सामाजिक कल्याण}}{\text{सुरक्षा पर कुल व्यय}}$$

(2) सार्वजनिक व्यय ऐसा होना चाहिए कि उत्पादन में वृद्धि हो। ऐसे उद्योगों सिंचाई के साधनों, शिक्षा व स्वास्थ्य पर किया गया व्यय उचित है क्योंकि इससे देश की उत्पादन शक्ति में वृद्धि होती है यद्यपि प्रतिरक्षा पर किया गया व्यय अनुत्पादक है परन्तु यह देश एवं समाज के लिए आवश्यक है क्योंकि इससे समाज को आन्तरिक व बाह्य सुरक्षा प्रदान की जाती है।